Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 6, Issue 2 – 2021
ISSN: 2581-3501

रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता पर पर्यावरण जागरूकता, लिंग एवं विद्यालय प्रकार का स्वतंत्र एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन

डा. डिम्पल रेडडी[1]

[1]सहायक प्राध्यापक (शिक्षा विभाग) ग्रेसियस कालेज आफ ऐजुकेशन बेलभाठा अभनपुर, रायपुर, छ.ग.

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन में रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता पर पर्यावरण जागरूकता, लिंग एवं विद्यालय प्रकार का स्वतंत्र एवं अंतःक्रियात्मक पडने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु रायपुर जिले के 30 स्कूल का चयन किया गया है। जिसमे 15 शासकीय और 15 आशासकीय विद्यालय शामिल है। 15 शासकीय स्कूल के 20-25 विद्यार्थी 15 आशासकीय स्कूल के 20-25 विद्यार्थी कुल 1000 विद्यार्थियों का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के आंकड़ो के संकलन के लिए प्रवीण कुमार झा एवं आरपी श्रीवास्तव द्वारा निर्मित मापनी का चयन किया गया है। प्राप्त प्रदतो के विश्लेशण के लिए टी परीक्षण का प्रयोग किया गया एवं निष्कर्ष में पाया गया की उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालय एवं निजी विद्यालय के छात्र छात्रों की सामाजिक परिपक्वता पर पर्यावरण जागरूकता, लिंग एवं विद्यालय प्रकार का स्वतंत्र एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव के बीच अंतर नहीं पाया गया।

भूमिका

मानव जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा की मनुष्य को सही अर्थों में मनुष्य बनाती है। जन्म के समय बालक का आचरण पशु के समान रहता है। वह अपनी मूल प्रवृत्ति

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

से प्रेरित होकर आचरण करता है। वह आधर निद्रा भय से ग्रस्त रहता है तथा वह पशुवत व्यवहार करता है। शिक्षा के द्वारा ही बालक का सर्वांगीण विकास होता है। इसलिए शिक्षा केवल विद्यालय तक ही सीमित नहीं रहती है। बल्कि संपूर्ण जीवन को स्पष्ट करती है।शिक्षा के आधुनिक आयाम जीवन जगत से जुड़े अनेक क्षेत्रां को छू रहे हैं जिसका मानव जीवन में अनेक घनिष्ठ संबंध है। शिक्षा का जैसे-जैस विकल्प हुआ है। वैसे-वैसे मनुष्य समाज की नवीन आवष्यकता की और चुनौतियां के प्रति उसका संबंध विकसित होता गया है। इसी आवश्यकता की एक अभिव्यक्ति पर्यावरण के प्रति जागरुकता उसे एक गुण है।

शिक्षा उस अंतिम सच्चाई को ढूंढना है, जो हमें मिट्टी के जीवन बंधनां से छुटकारा दिलाएं और हमें धन दे वस्तुओ का नहीं बल्कि आंतरिक रोशन का शक्ति का नहीं बल्कि प्यार का ताकि हम इस सच्चाई को जान सके और इसे अपने जीवन में कार्यान्वित कर सकें। - रविन्द्रनाथ टैगौर (1905)

पर्यावरण जागरुकता

आज पर्यावरण प्रदूषण विष्वव्यापी ज्वलंत समस्या है। इस समस्या से उबरने के लिए हर आयु वर्ग के सभी पुरुष महिला वर्ग में पर्यावरण के प्रति सकारात्मक संचेतना का होना अनिवार्य है। छात्र, छात्राओ, किशोरों, किशोरियां में उच्च स्तरीय पर्यावरणीय रुझान विकसित करना समय की आवश्यकता है।

पर्यावरण शिक्षा व पर्यावरण जागरुकता को एक ही अर्थ में प्रयुक्त करते हैं। परन्तु इनमें सार्थक अंतर है पर्यावरण जागरुकता पर परिवेश भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ग्रामीण किशोरों में पर्यावरण जागरुकता शहरी किशोरों के बजाय कम होती है। शहरों में पर्यावरण प्रदूषण अधिक होने से नगरीय जनसंख्या इसकी दुष्परिणाम को भुगत रही है उम्हें औद्योगिक कारखानें की चिमनी तथा स्वचलित वाहनां से निरंतर निकलने वाला धुंआ में सांस लेना पड़ता है। शहरों में पर्यावरण प्रदूषण के अन्य भी खतरे हैं। अतः शहरों में बसे लोग पर्यावरण अपदाओ के सहजता से शिकार हो जाते हैं।

अभिवृद्धि और विकास से है जो किसी विशेष प्रकार के व्यवहार को सीखने के पहले आवष्यक होता है। परिपक्वता एक शब्द के रूप में साधारणतयः दो अर्थों में प्रयोग की जाती

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

है। प्रथमतः उस बर्ताव के सम्बन्ध में जो परिपक्वता के आदर्श एवं उसकी उम्मीद को अनुकूल बनाता है। और द्वितीय उस बर्ताव के सम्बन्ध में जा निरीक्षण तहत व्यक्ति की उम्र के लिए उचित है। मनोवैज्ञानिक साधारणता परिपक्वता को द्वितीय अर्थ में प्रयुक्त करते हैं।

सामाजिक परिपक्वता

विकास एक बहुमुखी प्रक्रिया है इसमें बहुत सी बातों का समावेष होता है। विकास के क्रम के बालक का बौद्धिक पक्ष ही नहीं शरीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक पक्ष भी महत्वपूर्ण है। विकास के यह सभी पक्ष परस्पर सम्बन्धित हैं। परिपक्वता की ओर अग्रसर और विकास करता हुआ बालक न केवल शरीरिक बौद्धिक और संवेगात्मक व्यवहार में बल्कि सामाजिक रूप से भी उन्नति करता है। सामाजिक विकास के फलस्वरूप् उसे सामाजिकता की थाती प्राप्त होती है। समाजिकता व्यक्ति के व्यवहार को सकारात्मक एवं नकारात्मक स्वीकृत के साथ अदल-बदल कर प्रस्तुत करने की प्रक्रिया है। जो कुछ चीजों को स्वीकृत एवं कुछ अन्य चीजों की अस्वीकृत को आगे ले जाती है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व पर सामाजिक समूह, औपचारिकता, अनौपचारिकता के प्रभाव को महत्व देता है।

सामाजिक उन्नति का तात्पर्य लाभ या सामाजिक अपेक्षानुसार बर्ताव करने की योग्यता से है। इसको इस प्रकार प्रभावित किया गया है, ''वह प्रक्रिया जिसके द्वारा वृहद श्रेणी के साथ जन्मा व्यक्ति वास्तविक बर्ताव का मार्ग दिखलाता है जो कि बहुत ही सकरी श्रेणी के अन्दर सीमित है। वह श्रेणी जो व्यक्ति के समुदाय के आदर्शों के अनुसार इसके लिए प्रथागत और स्वीकार करने के योग्य है।

हरलॉक के मतानुसार ''सामाजिक उन्नति का तात्पर्य सामाजिक सम्बन्धों में परिपक्वता का प्राप्त करना है। जिसका अर्थ समूह के आदर्शों नैतिकता एवं परम्पराओंके अनुकूल बनाने की प्रक्रिया को सीखना है। और एकता के विचार अन्तः संचार और सहयोग को मन में रखना है। यह बर्ताव के नये तरीकों की उन्नति रुचि में बदलाव और नये मित्रों के चुनाव को शमिल करता है।

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता का उनकी सामाजिक परिपक्वता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।
2. रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता पर पर्यावरण जागरूकता, लिंग एवं विद्यालय प्रकार का स्वतंत्र एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

शोधकार्य के कार्यकाल के दौरान प्रस्तावित पद्धति

अनुसंधान विधि

इस अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो का चयन किया है।

न्यादर्श

व्यावहारिक तथा सामाजिक विषयों के शाध में न्यादर्श का विशेष महत्व होता है। इसका बिना शोध कार्य को पूरा नहीं किया जा सकता है। जब किसी जनसंख्या में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी कुछ इकाईयां को न्यादर्शन तथा चुनी हुई इकाईयों के समूह को न्यादर्श कहते हैं।

गुड तथा हॉट के अनुसारः- ''एक प्रतिदर्श जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है एक विस्तृत समूह का एक लघु प्रतिनिधि है।''

बोगार्डस के अनुसार- प्रतिदर्श एक पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार इकाईयों के एक समूह में से निश्चित प्रतिशत में इकाईयां का चयन हे। प्रतिदर्श का चयन स्तरीत याद्धच्छिक प्रतिदर्श आधार पर सम्पन्न किया गया है।

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 6, Issue 2 – 2021
ISSN: 2581-3501

क्षेत्र और परिसीमा

शोध के उद्देष्य की पूर्ति के लिए रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयां का चयन किया गया है, तथा इन विद्यालयों में से 1000 विद्यार्थी जिनमें से 500-500 छात्र-छात्राऐं है। जिनके द्वारा रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता का उनकी सामाजिक परिपक्वता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' किया जा सके।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के संकलन के लिए

1. डा0 प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित मापनी का चयन पर्यावरणीय अध्ययन हेतु किया गया है।
2. डा0 आर0पी0 श्रीवास्तव, सोशल मेच्योरिटी स्केल (मैनुअल) मापनी का चयन किया गया है।

सांख्यिकी विधि सांख्यिकी अनुसंधान का मूल आधार हैं। परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु प्राप्त आंकड़ो का विश्लेशण किया जायेगा इस हेतु आवश्यक सांख्यिकी जैसे -मध्यमान, t परिक्षण ANOVA एवं सहसंबंध गुणांक आदि का प्रयोग शोधकर्त्ता द्वारा किया जायेगा ।

शासकीय विद्यालय	छात्रों की संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता के अंश	t का मान
पर्यावरणीय जागरूकता	500	44.37	4.54	499	1.64
सामाजिक परिपक्वता	500	94.40	11.78	499	

उपयुक्त सरणी का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है की छात्र का पर्यावरणीय जागरूकता का मध्यमान 44.37 तथा प्रामाणिक विचलन 4.54 प्राप्त हुआ। सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 94.40 तथा प्रामाणिक विचलन 11.78 प्राप्त हुआ। टी का मान 1.64 प्राप्त हुआ जो सार्थकता स्तर पर सार्थक है। (fd~ =998 p<0-05) की पुष्टि करता है की शासकीय

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 6, Issue 2 – 2021
ISSN: 2581-3501

छात्र एवं शासकीय छात्रओ में पर्यावरणीय जागरूकता सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अशासकीय विद्यालय	छात्रों की संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता के अंश	t का मान
पर्यावरणीय जागरूकता	500	44.15	5 .04	499	1.64
सामाजिक परिपक्वता	500	93.97	11.71	499	

उपयुक्त सरणी का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है की छात्र का पर्यावरणीय जागरूकता का मध्यमान 44.37 तथा प्रामाणिक विचलन 4.54 प्राप्त हुआ। सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 94.40 तथा प्रामाणिक विचलन 11.78 प्राप्त हुआ।

टी का मान 1.64 प्राप्त हुआ जो सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

(fd~ =998 p<0-05) की पुष्टि करता है की शासकीय छात्र एवं शासकीय छात्रओ में पर्यावरणीय जागरूकता सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

अंतःक्रियात्मक अध्ययन से संबंधित परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं विवेचन

रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता का उनकी सामाजिक परिपक्वता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता का सामाजिक परिपक्वता पर प्रभाव का अध्ययन करना है। अतः सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु संपूर्ण विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता का उनकी सामाजिक परिपक्वता के लिये एकमार्गी प्रसरण विश्लेषण की संगणना की गयी है। इस प्रकार एक मार्गी प्रसरण विश्लषेण की संगणना से प्राप्त सारांश को सारणी 5.9 में दर्शाया गया है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता का सामाजिक परिपक्वता के स्वतंत्र एवं संयुक्त प्रभावों के संदर्भ में प्रसरण विश्लेषण variance Analysis का सारांश

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 6, Issue 2 – 2021
ISSN: 2581-3501

प्रसरण का स्त्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्रता की कोटि	मध्यमान वर्ग	f अनुपात
Between group	9574.597	25	382.984	2.754
with in group	135997.924	978	139.057	
कुल योग	145572.521	1003		

* = 0.05 सार्थकता स्तर, NS= सार्थक नहीं

स्वतंत्र प्रभाव

पर्यावरण जागरूकता

सारणी क्रमांक 5.9 का सावधानीपूर्वक निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों के पर्यावरण जागरूकता का सामाजिक परिपक्वता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है क्योंकि इस कारक के लिये F मूल्य 2.754 है जो कि कि df = 25/978 पर सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। इससे यह निश्कर्ष निकलता है कि पर्यावरण जागरूकता में विचलनशीलता उत्पन्न करते हैं। इस परिपेक्ष्य में शुन्य परिकल्पना कि पर्यावरण जागरूकता का सामाजिक परिपक्वता पर मुख्य प्रभाव नहीं पड़ेगा। **अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।**

रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता पर पर्यावरण जागरूकता, लिंग एवं विद्यालय प्रकार का स्वतंत्र एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता पर पर्यावरण जागरूकता, लिंग व विद्यालय प्रकार के प्रभाव का अध्ययन करना है। अतः सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु 2 पर्यावरण जागरूकता 2 लिंग X 2 विद्यालय प्रकार के लिये त्रिदिश प्रसरण विश्लेषण की संगणना की गई है। इस प्रकार (2x2x2) त्रिदिश प्रसरण विश्लेषण की संगणना से प्राप्त सारांश को सारणी क्रमांक 5.10 में दर्शाया गया है:-

तालिका सं. 20

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 6, Issue 2 – 2021
ISSN: 2581-3501

सारणी क्रमांक 5.10.उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता पर पर्यावरण जागरूकता, लिंग व विद्यालय प्रकार के स्वतंत्र एवं संयुक्त प्रभावों के संदर्भ में प्रसरण विश्लेषण का सारांश

प्रसरण का स्त्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्रता की कोटि	मध्यमान वर्ग	t अनुपात
पर्यावरण जागरूकता	5.273	1	5.273	0.039^{NS}
लिंग	1919.628	1	1919.628	14.375^{**}
विद्यालय प्रकार	187.502	1	187.502	1.404^{NS}
पर्यावरण जागरूकता X लिंग	360.180	1	360.180	2.697^{NS}
पर्यावरण जागरूकता X वि.प्र	103.554	1	103.554	0.775^{NS}
लिंग X विद्यालय प्रकार	16.703	1	16.703	0.125^{NS}
पारिवारिक वातावरण X लिंग X विद्यालय प्रकार	29.901	1	29.901	0.224^{NS}
त्रुटि	93474.845	700	133.35	
योग	96052.761	707		

**=0.01 सार्थकता स्तर, NS= सार्थक नहीं

स्वतंत्र प्रभाव

पर्यावरण जागरूकता

तालिका क्रमांक 5.10 का सावधानीपूर्वक निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि पर्यावरण जागरूकता का विद्यार्थियां की सामाजिक परिपक्वता पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। क्योंकि इस कारक के लिये एफ मान 0.039 स्वतंत्रता की कोटी (1,700) पर 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि पर्यावरण जागरूकता, विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है। अतः परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता के प्राप्तांकों पर पर्यावरण जागरूकता का स्वतंत्र प्रभाव नहीं पाया जायेगा, **स्वीकृत होती है।**

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

लिंग

लिंग का विद्यार्थियां की सामाजिक परिपक्वता पर क्या प्रभाव पड़ता है? इस अध्ययन हेतु तालिका क्रमांक 5.10 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि लिंग कारक के लिये एफ मान F=14.375 स्वतंत्रता की कोटी (df=1,700) पर 0.05 स्तर पर सार्थक है। जो इस ओर संकेत करता है कि छात्र-छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता में विचलनशीलता का एक कारक लिंग भी है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि लिंग विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता को सार्थक रूप से प्रभावित करता है, **अतः परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता के प्राप्तांकों पर लिंग का स्वतंत्र प्रभाव नहीं पाया जायेगा, अस्वीकृत होती है।**

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अस्थाना एवं अस्थाना, (2005), "मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन", पुस्तक मंदिर, आगरा-2, पृष्ठ 423-439, 201-210.
2. कपिल, एच.के.1998 सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा। पृष्ठ 35-93.
3. कपिल, एच.के. 1998 अनुसंधान विधियां, हरप्रसाद भार्गव, आगरा। पृष्ठ 20-113.
4. कुम्भकार, शिवराय 1993 एम.एड. लघु शोध प्रबंध $2 स्तर 12वीं पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओ की पर्यावरण प्रदूषण संबंधी अभिक्षमता तथा पर्यावरण संरक्षण में उनके प्रभाव का अध्ययन। पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर। पृष्ठ 1-28.
5. गैरेट हेनरी ई. (1987),"शिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना, पेज नं.160.
6. द्विवेदी दीपाली, अ स्टडी ऑफ कोरिलेशन बेटवीन सेल्फ कान्फीडेन्स एण्ड सोशल मैच्योरिटी ऑफ मेल एण्ड फीमेल स्टूडेन्ट आफ साइंश एण्ड आर्ट फेकल्टीस, 2006 एम0फिल0 पृ0सं0 8-7.
7. पचौरी, डॉ गिरीश (2008) "शिक्षा के मनेविज्ञान आधार" प्रकाशक- विनय रखेजा आर.लाल बुक डिपो निकट गवर्नमेण्ट कॉलेज, मेरठ - 250001 पृष्ठ 65-83, 116-124, 239-243.
8. पाठक पी.डी. (2006), "शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा-2, पेज नं. 136-138 196.

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

9. पाण्डेय, डॉ. रामसकल, पाठक,पी.डी. (2005-06) "शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर आगरा -2, पृष्ठ 58.
10. पाण्डया, शकुन्तला, ''विद्यालयों में नैतिक शिक्षा की प्रेरक विधाएँ'' राजस्थान प्रकाशन जयपुर, 1994, पृ0136.
11. भार्गव, महेश, '' आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन '' हर प्रसाद भार्गव, शैक्षिक प्रकाशन, 1/230, कचहरी घाट, आगरा, 1992.
12. भटनागर, संजय, ''भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास'', आर0एल0लाल बुक डिपो, पेज नं0 382, 383, 384, 385-2005.
13. माथुर, डॉ. एस.एस (2009) "शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर आगरा-2, पृष्ठ 60.
14. मिश्र, आनन्द, ''भारतीय शिक्षा के प्रवर्तक'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, कानपुर।
15. मिश्रा, डी0सी0, ''भारत में शैक्षिक पद्धति का विकास'', अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर।
16. मिश्र, श्रीकान्त, ''नैतिक शिक्षा के प्रति शिक्षकों, छात्रों एवं अभिभावकों की अभिवृत्ति एवं उनकी धर्म निरपेक्ष नैतिकता का अध्ययन'' पी-एच0डी0 काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी 1992, पृ0 129.
17. मुखर्जी, रविन्द्र नाथ, ''भारतीय सामाजिक संस्थाएं'' विवेक प्रकाशन, यू0ए0 जवाहर नगर दिल्ली, 1983.
18. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, अनुच्छेद 84, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार (शिक्षा विभाग), नई दिल्ली 1986। 177.
19. रूहेसा, एस0पी0, '' भारतीय शिक्षा का समाज शास्त्र'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1992.
20. राय पारसनाथ, (1978),"अनुसंधान का परिचय", लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पेज नं.-28.
21. वर्मा, श्रीवास्तव (2007, 2008) "आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान", प्रकाशक-अग्रवाल पाब्लिकेशन निर्भय नगर, गैलाना रोड आगरा-7 पृष्ठ 490-506-, 523-531.
22. व्यास, हरिष्चन्द्र, ''नैतिक शिक्षा का पहला आयाम'' भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन0सी0 ई0आर0टी0 1993.

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

23. शर्मा, आर.ए. (2008) "शिक्षा अनुसंधान" प्रकाशक-विनय रखेजा, आर.लाल बुक डिपो निकट गवर्नमेण्ट कॉलेज, मेरठ - 250001 पृष्ठ 1-28, 29-53.
24. शर्मा आर. ए. (2013), शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया", आर.लाल. बुक डिपो, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ, पेज नं. 2, 4.
25. शेट्ये, प्रतिभा 1997 एम.एड. लघु शोध-प्रबंध, वियय माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की पर्यावरणीय अभिक्षमता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं वैज्ञानिक अभिक्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन। पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर।
26. सरीन एवं सरीन (2012) ''शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ'' अग्रवाल पब्लिकेशन।
27. सिंह, पी0 ''सामाजिक मूल्यों का अवरोपण'', भारतय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्श 20, अंक - 1, 2001.
28. सिह, कुमार अरूण (2001) "शिक्षा मनोविज्ञान", भारती भवन पाब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृष्ठ 196-214.
29. सिंह, अरूण कुमार (1998) "शिक्षा के सामाजिक मनोविज्ञान", वाल्यूम-2, पृ. 707-731.
30. श्रीवास्तव, एस0एस0, ''विभिन्न अभिकरणें द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों के जीवन मूल्य'', भारतीय शोध पत्रिका, वर्श-1, अंक-1, 1982.
31. श्रीवास्तव, सरिता, ''भारत में शिक्षा का विकास'' साहित्य प्रकाशन आगरा, पेज नं0 217 -222, 2012। 178.
32. त्रिपाठी, लाल बचन, (2008) "आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान", प्रकाशक- एच.पी. भार्गव बुक हाउस, 4/230, कचहरी घाट, आगरा 282004 पृष्ठ 327-360.

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.